मानवी मूल्यों का आधार - आध्यात्मिकता: ब्रह्माकुमारी राजयोगिनी दादी कमलमणी

सभी प्राणियों में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। हीरे तुल्य, देव तुल्य माना जाता है। आध्यात्मिकता की शक्ति ईश्वरीय अनुभूति का स्रोत माना जाता है। इसके विपरित नमुष्य को कौड़ी तुल्य कहा गया है। कहाँ हीरा और कहाँ कौड़ी, दोनों में महान अन्तर है। हीरे तुल्य, देव तुल्य का कारण, मानव जीवन में मानवी मूल्यों का होना या न होना है। जब मानव में सदगुण होते हैं तो मानव हीरे तुल्य देव तुल्य कहलाता है। परन्तु जब सदगुणों के स्थान पर अवगुण अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत आदि बुराई प्रवेश करती है तो जीवन कौड़ी तुल्य बन जाता है। इसलिए सृष्टि में युगों की परिभाषा भी मानवी मूल्यों के आधार पर गाई जाती है। सतयुग माना दैवी गुणों से सदगुणों से, मानवी मूल्यों से भरपूर हीरे तुल्य देव तुल्य जीवन। कलयुग माना मानवी मूल्यों के स्थान पर आसुरी गुणा, अवगुणों से भरपूर कौड़ी तुल्य मानव।

मानवी मूल्य, श्रेष्ठ जीवन, श्रेष्ठ परिवार, श्रेष्ठ समाज की नींव है और आध्यात्मिकता मानवी मूल्यों की कुंजी है जो हमारे अन्दर सुषुप्त अवस्था में पड़ी हुई अनेक दिव्य शक्तियों के दरवाजे खोलती है। सदगुणों की खान की अनुभूति कराती है। जैसे प्रभात के समय इस धरा पर सूर्य की किरणें पहुंचते ही अंधकार समाप्त हो जाता है। अंधकार में पड़ी हुई मूल्यवान वस्तु भी मूल्यहीन हो जाती है। परन्तु किसी दीपक के प्रकाश से तथा सूर्य के प्रकाश से हर वस्तु मूल्यवान बन जाती है। ऐसे आध्यात्मिकता भी प्रकाश की तहर हमारे अन्दर मानवी मूल्यों व सदगुणों की खान के अनेक सुषुप्त खजानों की जागृति पैदा करती है। आध्यात्मिकता जो मानवी मूल्यों को जागृत करती है उसके वास्तविक पांच सूत्र है।

आध्यात्किता अर्थात **पहला सूत्र:** मानवी मूल्यों को धारण करने वाला मैं कोन अर्थात अपने निज स्वरूप की जागृति। इस विनाशी देह में मस्तक के बीच भृकुटी के मध्य निवास करने वाली अथज्ञत सर्व मूल्यों को धारण करने वाली मैं अविनाशी आत्मा मेरा निज **स्वरूप ज्योति स्वरूप** है। मैं आत्मा प्रेम स्वरूप, शान्त स्वरूप, पवित्र स्वरूप हूँ। इन सदगुणों व मूल्यों से भरपूर हूँ आध्यात्मिकता अर्थात **दूसरा सूत्र** है मानवी मूल्यों व सदगुणों को धारण कराने कीशक्ति देने वाला मुझ आत्मा का परमपिता परमात्मा कौन? अर्थात अपने निज आत्मिक पिता स्व-पिता जो मुझ आत्मा के स्वरूप की तरह निराकार ज्योति स्वरूप परमपिता शिव है उसकी अनुभूति करना सहज राजयोग के माध्यम से उससे सर्व सम्बन्ध जोड़ कर सर्व गुणों व सर्व शक्तियों की अनुभूति करना। आध्यात्मिकता अर्थात **तीसरा सूत्र** है अपने स्वलक्ष्य की जागृति! मानव जीवन हीरे तुल्य है, देव तुल्य है। सर्वश्रेष्ठ है, ऐस जीवन बनाना ही मेरा लक्ष्य है। जीवन को चरित्रवान बनाना और नि:स्वार्थ समाज सेवा करना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है।

आध्यात्किता अर्थात **चौथा सूत्र** मुझ आत्मा का निज घर अर्थात स्वदेश की स्मृति! मैं आत्मा परमपिता परमात्मा के घर ब्रह्मलोक व आत्माओं की दुनियां से सर्व गुणों से सम्पन्न हीरे तुल्य इस मानवी दैवी चोले में इस सृष्टि रंग मंच पर आई थी और अब मुझे फिर से सर्व गुणों से सम्पन्न बन अपने स्वदेश वापिस घर जाना है। आध्यात्मिकता अर्थात **पांचवा सूत्र** श्रेष्ठ कर्म तथा स्वर्म एवं मॅलयनिष्ठ व्यवहार शान्ति, प्रेम, सहयोग, ईमानदारी आदि सर्वगुण मेरे हर कर्म में, व्यवहार में, जीवन में स्वयं को और दूसरों को अनुभव हो यही मेरा कर्म है।

सोना चांदी देश को या व्यक्ति को महान नहीं बना सकता बल्कि जीवन को, देश को, समाज को महान बनाने के लिए सत्य, अहिंसा, प्रेम, ईमानदारी, परोपकार, शान्ति, श्रेष्ठ चरित्र, कर्त्तव्यनिष्ठ, मानवतावाद ऐसे सदगुणों से अर्थात मानवी मूल्यों की धारणा से ही व्यक्ति और समाज महान बनता है। जैसे छोटी सी दीया

सलाई, छोटी सी चिंगारी बड़े-बड़े भवनों को व मूल्यवान सम्पत्ति को नष्ट कर देती है ऐसे आध्यात्मिकता की चिंगारी अर्थात आध्यात्मिकता की जागृति मानव को, व समाज को श्रेष्ठ गुणों से सदगुणों से सुसज्जित कर देती है।

वर्तमान युग में बड़े-बड़े कारखानों के निर्माण, विशाल बांधों के निर्माण, भव्य भवनों के निर्माण के कार्यों के साथ-साथ बल्कि इससे भी कई गुणा ज्यादा आज मानवी मूल्यों से सम्पन्न जीवन, सौन्दर्य सम्पन्न जीवन की आवश्यकता है देश का विकास तभी सम्भव है जब विकसित श्रेष्ठ मनोवृत्ति वाले मानव व मानवी मूल्यों से भरपूर हों। इसलिए यह कहना अत्यन्त युक्तियुक्त है कि देश व समाज के निर्माण में आदर्श एवं चरित्रवान मानव सिमेन्ट एवं लोहे का कार्य करता है।

ऐसा श्रेष्ठ आदर्श, चरित्रवान, मूल्यनिष्ठ समाज का निर्माण आध्यात्मिकता एवं आध्यात्मिक शिक्षा से ही सम्भव है। आध्यात्मिक शिक्षा से ही बन्धुत्व की भावना का जन्म होगा। सादा जीवन उच्च विचार की कहावत चरित्रार्थ होगी और यही समाज वसुधैव कुटुम्बकम का रूप लेगा।

इस दिशा में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय सहज राजयोग की आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से मूल्यनिष्ठ जीवन की धारणा का कार्य समाज के सभी वर्गो में व अनेक स्कूलों कालेजों में कर रहा है। जिसके चमत्कारी परिणाम दिखाई देते हैं।

तो आओ हम सभी फिर से आध्यत्मिकता की जागृति द्वारा स्वयं के व सर्व के जीवन को मूल्यनिष्ठ बनायें।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com